**असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सजोगो असंखेज्जगुणो ॥**

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं सुगमं ।

**सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १६२ ॥**

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

**बीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १६३ ॥**

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एत्थ णिव्वत्तिपज्जत्तजहण्ण-परिणामजोगो घेत्तव्वो ।

**तीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १६४ ॥**

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो उवरि सव्वत्थ गुणगारो पलिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागो चेव होदि त्ति घेत्तव्वं ।

**चउरिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो । १६५ ।**

सुगमं ।

**असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १६६ ॥**

---

**उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है । १६१ ।**

गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । इसका कारण सुगम है ।

**उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है । १६२ ।**

गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

**उससे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १६३ ॥**

गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । यहां निर्वृत्तिपर्याप्तके जघन्य परिणाम-योगको ग्रहण करना चाहिये ।

**उससे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १६४ ॥**

गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । आगे सब जगह गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग ही होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

**उससे चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १६५ ॥**

यह सूत्र सुगम है ।

**उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १६६ ॥**

सुगमं ।

**सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥**

सुगमं ।

**बीइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥**

सुगमं ।

**तीइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो✪ ॥**

सुगमं ।

**चउरिंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥**

सुगमं ।

**असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥१७२ ॥**

सुगमं ।

**सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १७२ ॥**

---

यह सूत्र सुगम है ।

**उससे संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १६७ ॥**

यह सूत्र सुगम है ।

**उससे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १६८ ॥**

यह सूत्र सुगम है ।

**उससे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १६९ ॥**

यह सूत्र सुगम है ।

**उससे चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १७० ॥**

यह सूत्र सुगम है ।

**उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १७१ ॥**

यह सूत्र सुगम है ।

**उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १७२ ॥**

---

✪ आप्रतौ 'संखेज्जगुणो', ताप्रतौ '(अ) संखेज्जगुणो' इति पाठः ।

सुगमं ।

**एवमेक्केक्कस्स जोगगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १७३ ॥**

पुव्वुत्तासेसजोगट्ठाणाणं गुणगारस्स पमाणमेदेण सुत्तेण परूविदं । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि त्ति कधं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणंतर(✻)मवेक्खदे, अणवत्थापसंगादो । एसो मूलवीणाए अप्पाबहुगालावो देसामासिओ(✻), सूचिदपरूवणादिअणुओगद्दारत्तादो(✻) । तेण एत्थ परूवणा पमाणमप्पाबहुगमिदि तिण्णि अणुओगद्दाराणि परूवेदव्वाणि । तत्थ परूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा-- सत्तण्णं लद्धिअपज्जत्त(✻)जीवसमासाणमत्थि उववादजोगट्ठाणाणि एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि परिणामजोगट्ठाणाणि च । सत्तण्णं णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासाणमत्थि उववादजोगट्ठाणाणि एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि च(✻) । सत्तण्णं णिव्वत्तिपज्जत्तयाणमत्थि परिणामजोगट्ठाणाणि चेव । परूवणा समत्ता ।

---

यह सूत्र सुगम है ।

**इस प्रकार प्रत्येक जीवके योगका गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ॥ १७३ ॥**

इस सूत्र द्वारा पूर्वोक्त समस्त योगस्थानोंके गुणकारका प्रमाण कहा गया है ।

शंका--- पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान--- वह इसी सूत्रसे जाना जाता है । यह सूत्र स्वयं प्रमाणभूत होनेसे किसी अन्य प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता, क्योंकि, ऐसा होनेपर अनवस्था दोषका प्रसंग आता है ।

यह मूल वीणाका अल्पबहुत्व-आलाप देशामर्शक है, क्योंकि, वह प्ररूपणा आदि अनुयोगद्वारोंका सूचक है । इसलिये यहां प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व, इन तीन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । उनमें प्ररूपणाको कहते हैं । वह इस प्रकार है--- सात लब्ध्यपर्याप्त जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान, एकान्तानुवृद्धियोगस्थान और परिणामयोगस्थान होते हैं । सात निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान व एकान्तानुवृद्धियोगस्थान होते हैं । सात निर्वृत्तिपर्याप्तकोंके परिणामयोगस्थान ही होते हैं । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

---

(✻) ताप्रतौ 'ण च (पमाणं) पमाणंतर-' इति पाठः । (✻) अ-काप्रत्योः 'देसामासओ' इति पाठः । (✻) आप्रतौ 'अणिओगद्दारादो' इति पाठः । (✻) अ-आ-काप्रतिषु 'सत्तण्णं अत्थिअपज्जत्त', ताप्रतौ 'सत्तण्णं अपज्जत्त-' इति पाठः । (✻) अ-आ-काप्रतिषु 'च' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते ।

**संपहि पमाणं वुच्चदे। तं जहा– एदेसिं वुत्तसव्वजीवसमासाणं उववादजोगट्ठाणाणं एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणं परिणामजोगट्ठाणाणं च पमाणं सेडीए असंखेज्जदिभागो। पमाणपरूवणा गदा।**

**अप्पाबहुगं ( दुविहं ) जोगट्ठाणप्पाबहुगं जोगविभागपडिच्छेदप्पाबहुगं चेदि। तत्थ जोगट्ठाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। तं जहा– सव्वत्थोवाणि सत्तण्णं लद्धिअपज्जत्ताणमुववादजोगट्ठाणाणि। तेसिमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि। परिणामजोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि। सत्तण्णं णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासाणं सव्वत्थोवाणि उववादजोगट्ठाणाणि। एगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि। सत्तण्णं णिव्वत्तिपज्जत्ताणं णत्थि✠ अप्पाबहुगं, परिणामजोगट्ठाणाणि मोत्तूण तत्थ अण्णेसिं जोगट्ठाणाणमभावादो। सव्वत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एवं जोगट्ठाणप्पाबहुगं समत्तं।**

**चोद्दसजीवसमासाणं जोगाविभागपडिच्छेदप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणमिदि। तत्थ ताव सत्थाणं वत्तइस्सामो। तं जहा– सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा। तस्सेव उक्कस्सुववादजोगट्ठाणस्स**

---

अब प्रमाणकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है– इन उक्त सब जीवसमासोंके उपपादयोगस्थानों, एकान्तानुवृद्धियोगस्थानों और परिणामयोगस्थानोंका प्रमाण जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र है। प्रमाणकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

अल्पबहुत्व दो प्रकार है– योगस्थानअल्पबहुत्व और योगाविभागप्रतिच्छेदअल्पबहुत्व। उनमें योगस्थानअल्पबहुत्वको कहते हैं। वह इस प्रकार है– सात लब्ध्यपर्याप्तकोंके उपपादयोगस्थान सबसे स्तोक हैं। उनसे उनके एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणे हैं। उनसे परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणे हैं। सात निर्वृत्तिअपर्याप्त जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान सबसे स्तोक हैं। उनसे एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणे हैं। सात निर्वृत्तिपर्याप्तकोंके अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, परिणामयोगस्थानोंको छोडकर उनमें अन्य योगस्थानोंका अभाव है। गुणकार सब जगह पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। इस प्रकार योगस्थानअल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

चौदह जीवसमासोंका योगाविभागप्रतिच्छेदअल्पबहुत्व तीन प्रकार है– स्वस्थान, परस्थान और सर्वपरस्थान। उनमें पहिले स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं। वह इस प्रकार है– सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं। उनसे उसीके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान

---

✠ अ-आ-काप्रतिषु 'अत्थि', ताप्रतौ 'अ ( ण ) त्थि' इति पाठः।

**अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तदो तस्सेव जहण्णएगंताणुवड्ढिजोगस्स❀ अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तस्सुवरि तस्सेव उक्कस्सएगंताणुवड्ढिजोगस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तस्सेव जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तस्सुवरि तस्सेव उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । एवं सेसाणं पि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासाणं सत्थाणप्पाबहुगं भाणिदव्वं ।**

**सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णउववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा । तस्सेव उक्कस्सउववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तदो तस्सेव जहण्णएगंताणुवड्ढिजोगस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तदो⊗ तस्सेव उक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगस्स✡ अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । एवं सेसाणं छण्णं णिव्वत्तिअपज्जत्ताणं सत्थाणप्पाबहुगं भाणिदव्वं ।**

**सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा । तस्सेव उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । एवं सेसाणं पि छण्णं णिव्वत्तिपज्जत्ताणं सत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं ।**

---

सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसीके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । उसके आगे उसीके उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसके ही जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । उसके आगे उसके ही उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार शेष लब्ध्यपर्याप्त जीवसमासोंके भी स्वस्थानअल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं । उनसे उसके ही उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसके ही जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे है उनसे उसके ही उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार शेष छह निर्वृत्त्यपर्याप्तोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन कराना चाहिये ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं । उनसे उसके ही उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार शेष छह निर्वृत्तिपर्याप्तकोंके भी स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

---

❀ अ-आ-काप्रतिषु 'एगंताणुवड्ढीओजोगस्स' इति पाठः । ⊗ ताप्रतौ 'तदो' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते । ✡ अ-क-प्रत्योः 'जोगट्ठाणस्स' इति पाठः ।

एत्तो परत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो– किं परत्थाणं ? बादर-सुहुम-बि-ति-चउरिंदिय-असण्णि-सण्णिपंचिंदियाणं मज्झे एक्केक्कस्स लद्धिअपज्जत्त-णिव्वत्तिअपज्जत्तणिव्वत्तिपज्जत्तभेदभिण्णस्स उववाद--एयंताणवड्ढि(1)--परिणामजोगट्ठाणाणं जहण्णुक्कस्सभेदभिण्णाणं जमप्पाबहुगं तं परत्थाणं णाम । सव्वत्थोवा सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णउववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णउववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तस्सुवरि तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सउववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तस्सुवरि तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सउववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तस्सुवरि तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णएगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तस्सुवरि तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णएगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स(2) अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तस्सुवरि तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स(3) अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तस्सुवरि तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स

---

अब यहांसे आगे परस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं –

शंका–– परस्थान किसे कहते हैं ?

समाधान–– बादर, सूक्ष्म, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय तथा असंज्ञी व संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके मध्यमें लब्ध्यपर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त व निर्वृत्तिपर्याप्तके भेदसे भेदको प्राप्त हुए प्रत्येक जीवके जघन्य व उत्कृष्ट भेदसे भिन्न उपपाद एकान्तानुवृद्धि एवं परिणाम योगस्थानोंका जो अल्पबहुत्व है वह परस्थान अल्पबहुत्व कहलाता है ।

सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं । उनसे उसके ही निर्वृत्यपर्याप्तके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । उसके आगे उसके ही लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । इसके आगे उसके ही निर्वृत्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । इसके आगे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । इसके आगे उसी निर्वृत्यपर्याप्तकके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । इसके आगे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । इसके आगे उसी निर्वृत्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट

---

(1) अ-आ-काप्रतिषु 'वेयंताणुवड्ढि' इति पाठः । (2) अ-ताप्रत्योः 'जोगस्स' इति पाठः ।
(3) अप्रतौ 'जोगस्स' इति पाठः ।

उक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि तस्सेव उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। एवं चेव बादरेइंदियस्स वि परत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं।

सव्वत्थोवा बीइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा। ( तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। ) तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। ( तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। ) तस्सेव लद्धि(1)अपज्जत्तयस्स जहण्णएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव लद्धि(2)अपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव लद्धि(3)अपज्जत्तयस्स उक्कस्स---

---

एकान्तानुवृद्धियोगस्थान संबंधी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान संबंधी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे उसीके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान संबंधी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे निर्वृत्तिपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान संबंधी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे निर्वृत्तिपर्याप्तकके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार ही बादर एकेन्द्रिय जीवके भी परस्थान अल्पबहुत्वको कहना चाहिये।

द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान संबंधी अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं। ( उनसे उसी निर्वृत्त्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान संबंधी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। ) उनसे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान संबंधी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। ( उनसे उसी निर्वृत्त्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान संबंधी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। ) उनसे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यात--

---

(1) अ-कप्रत्योः 'णिव्वत्ति' इति पाठः।    (2) अ-कप्रत्योः 'णिव्वत्ति' इति पाठः।
(3) अ-कप्रत्योः 'णिव्वत्ति' इति पाठः।

परिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव☼ णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। एवं चेव तीइंदियादीणं⊛ पि परत्थाणअप्पबहुगं जाणिदूण भाणिदव्वं।

एत्तो सव्वपरत्थाणप्पाबहुगं तिविहं- जहण्णयमुक्कस्सयं जहण्णुक्कस्सयं चेदि। तत्थ जहण्णप्पाबहुगं भणिस्सामो। तं जहा- सव्वत्थोवं सुहुमेइंदियलध्दिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणं। सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बादरेइंदियलध्दिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणं असंखेज्जगुणं। बेइंदियलध्दिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। तेइंदियलध्दिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्त--

---

गुणे हैं। उनसे उसी निर्वृत्त्यपर्याप्तकके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद संख्यातगुणे हैं। उनसे उसी निर्वृत्त्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोगस्थान संबंधी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसी निर्वृत्तिपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसी निर्वृत्तिपर्याप्तकके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छद असंख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार ही त्रीन्द्रिय आदि जीवोंके भी परस्थान अल्पबहुत्वको जानकर कहना चाहिये।

यहां सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व तीन प्रकार है- जघन्य, उत्कृष्ट और जघन्योत्कृष्ट। उनमें जघन्य अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है- सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान सबसे स्तोक है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय

---

☼ आप्रतौ 'तस्सेव लद्धिअपज्ज० उक्क० एवं तस्सेव' इति पाठः।

⊛ अ-आ-काप्रतिषु 'तीइंदियाणं' इति पाठः।

यस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । ✡चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववाद⊛जोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणं असंखेज्जगुणं । बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । सुहुमेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । बादरेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं ।

---

निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा हैं । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एका-

---

✡ अ-आ-काप्रतिष्वनुपलभ्यमानं वाक्यमिदं मप्रतितोऽत्र योजितम्, ताप्रतौ कोष्ठकान्तर्गतमस्ति तत् ।

⊛ ताप्रतौ ' जहण्णमुवाद- ' इति पाठः ।

बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । तेइंदियलद्धि-अपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं चउरिंदियलद्धिअपज्जत्त-यस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्त-यस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं । बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । तीइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्ज-गुणो । असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदिय-णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एगंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । तीइंदियणिव्व-त्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एगंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्ति-अपज्जत्तयस्स जहण्णओ एगंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियणिव्व-त्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एगंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । ( सण्णिपंचिंदिय-णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एगंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । ) बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियणिव्व-त्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्ति-

---

न्तानुवृद्धियोगस्थान असख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धि-योगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग-स्थान असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग-स्थान असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त-कका जघन्य परिणामयोग संख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । (उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । ) उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणाम-

**पज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । एवं जहण्णवीणालावो समत्तो ।**

**एत्तो उक्कस्सवीणालावं वत्तइस्सामो । तं जहा – सव्वत्थोवो✲ सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो । सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । ✲असण्णिपंचिंदियलद्धि◎अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णि-**

योग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । इस प्रकार जघन्य वीणालाप समाप्त हुआ ।

अब यहांसे आगे उत्कृष्ट वीणालापकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है –सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग सबसे स्तोक है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी

✲ प्रतिषु ' सव्वत्थोवा ' इति पाठः । ✲ वाक्यमिदं नोपलभ्यते अ-आ-काप्रतिषु, मप्रतौ तूपलभ्यते तत् ताप्रतौ कोष्ठकान्तर्गतमस्ति । ◎ अ-क-प्रत्योः ' णिव्वत्ति ' इति पाठः ।

**पंचिदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णि- पंचिदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिदिय- णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियलद्धि- अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एगंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियणिव्वत्ति- अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एगंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्ज- त्तयस्स उक्कस्सओ एगंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्त- यस्स उक्कस्सओ एगंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स✱ उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डि- जोगो असंखेज्जगुणो । तीइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असं- खेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असं-**

---

पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्त- कका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एका- न्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्ता- नुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्य- पर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्य- पर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय

---

✱ ताप्रतौ ' णिव्वत्ति (अ) पज्ज. 'इति पाठः ।

खेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स(1) उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । बीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । तीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो ।

---

लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग

---

(1) अ-आ-काप्रतिषु 'णिव्वत्तिपज्ज.' इति पाठः ।

**सण्णिपंचिदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । एव-मुक्कस्सवीणालावो समत्तो ।**

**संपहि जहण्णुक्कस्सप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा– सव्व☼त्थोवो सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो । सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमे②इंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । ✿बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदिय❀लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ**

---

असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । इस प्रकार उत्कृष्ट वीणालाप समाप्त हुआ ।

अब जघन्योत्कृष्ट अल्पबहुत्वको कहते हैं । वह इस प्रकार है— सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग सबसे स्तोक हैं । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा हैं । उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यात—

---

☼ सुहुमगलद्धिजहण्णं तण्णिव्वत्तीजहण्णयं तत्तो । लद्धिअपुण्णुक्कस्सं बादरलद्धिस्स अवरमदो ।। गो. क. २३३.

② णिव्वत्तिसुहुमजेट्ठं बादरणिव्वत्तियस्स अवरं तु । बादरलद्धिस्स वरं बीइंदियलद्धिगजहण्णं ।। गो. क. २३४.

✿ बादरणिव्वत्तिवरं णिव्वत्तिबिइंदियस्स अवरमदो । एवं बि-ति-बि-ति-ति-च-ति-च-चउ-विमणो होदि चउविमणो ।। गो क. २३५ ❀ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिषु 'तेइंदिय' ताप्रतौ 'ते (वे) इंदिय' इति पाठः ।

**उववादजोगो असंखेज्जगुणो। बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगणो। चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। ✱असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। ⊗असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगणो। सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदियलध्दिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो।**

---

गुणा है। उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपाद-

---

✱ ताप्रतौ 'चउरिंदिय ( असण्णिपंचिंदिय ) णिव्वत्ति' इति पाठः।

⊗ तह य असण्णी सण्णी असण्णिसण्णिस्स सण्णिउववादं। सुहुमेइंदियलद्धिगअवरं एयंतवड्ढिस्स।। गो. क. २३६.

**सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । ✱सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । ✱सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । तदो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि जोगट्ठाणाणि अंतरिदूण सुहुमेइदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगणो । ✱तदो**

---

योग असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे आगे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थानोंका अन्तर करके सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यात-

---

✱ सण्णिस्सुववादवरं णिव्वत्तिगदस्स सुहुमजीवस्स। एयंतवड्ढिअवरं लद्धिदरे थूल-थूले य॥ गो. क. २३७.

✱ तह सुहुम-सुहुमजेट्ठं तो बादर-बादरे वरं होदि। अंतरमवरं लद्धिग सुहुमिदर-वरं पि परिणामे॥ गो. क. २३८.

✱ अंतरमुवरी वि पुणो तप्पुण्णाणं च उवरि अंतरियं। एयंतवड्ढिठाणा तसपणलद्धिस्स अवरवरा॥ गो. क. २३९.

**सेडीए असंखेज्जदिभागमंतरं होदूण⊗ सुहुमेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स☼ जहण्णओ परिणाम◆जोगो असंखेज्जगुणो। बादरेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। सुहुमेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। बादरेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। तदो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तं अंतरं होदूण बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णएयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणु✤वड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदयलद्धि--**

---

गुणा है। उससे आगे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र अन्तर होकर सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। इसके आगे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र अन्तर होकर द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे

---

⊗ अ-आ-काप्रतिषु 'होदूण' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते। ☼ ताप्रतौ 'णिव्वत्तिअपज्ज...यस्स' इति पाठः। ◆ का-ताप्रत्योः 'जहण्णपरिणाम' इति पाठः। ✤ ताप्रतौ 'जहण्णएयंताणु.' इति पाठः।

अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो तदो♠ सेडीए असंखेज्ज- दिभागमेत्तजोगट्ठाणाणि अंतरिदूण बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदियलद्धि- अपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणाजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। तदो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजोगट्ठाणाणि अंतरिदूण बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो। तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ जहण्णओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स

---

संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे आगे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थानोंका अन्तर करके द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणाम- योग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यात- गुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे आगे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थानोंका अन्तर करके द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य

---

♠ लद्धी-णिव्वत्तीणं परिणामेयंतवड्डिटाणाओ। परिणामट्ठाणाओ अंतर-अंतरिय उवरुवरिं ॥ गो. क. २४०.

**जहण्णओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स✲ उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । तदो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजोगट्ठाणाणि◆ अंतरं होदूण बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असं-**

---

एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे आगे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थानोंका अन्तर होकर द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय

---

✲ ताप्रतौ 'लद्धिअपज्ज०' इति पाठः । ◆ अ-का-ताप्रतिषु 'जोगट्ठाणे' इति पाठः ।

**खेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । गुणगारो सव्वत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो होंतो वि अप्पणो इच्छिदजोगादो हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाओ विरलेदूण विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तो होदि♠ । एसो गुणगारो चदुण्णं पि वीणापदाणं✪ वत्तव्वो । एवं जहण्णुक्कस्सा वीणा♋ समत्ता ।**

**उववादजोगो णाम कत्थ होदि ? उप्पण्णपढमसमए चेव✤ । केवडिओ तस्स कालो ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ◆ । उप्पण्णबिदियसमयप्पहुडि जाव सरीरपज्जत्तीए अपज्जत्तयदचरिमसमओ ताव एगंताणुवड्ढिजोगो होदि✲ । णवरि लद्धिअपज्जत्ताणमाउअबंधपाओग्गकाले सगजीविदतिभागे परिणामजोगो होदि । हेट्ठा एगंताणुवड्ढिजोगो चेव । लद्धिअपज्जत्ताणमाउअबंधकाले चेव परिणामजोगो होदि**

---

निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । गुणकार सब जगह पल्योपमका असंख्यातवां भाग होकर भी वह अपने इच्छित योगसे नीचेकी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके उनकी अन्योन्याभ्यस्त राशि प्रमाण होता है । यह गुणकार चारों ही वीणापदोंके कहना चाहिये । इस प्रकार जघन्योत्कृष्ट वीणा समाप्त हुई ।

शंका-- उपपादयोग कहांपर होता है ?

समाधान-- वह उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही होता है ।

शंका-- उसका काल कितना है ?

समाधान-- उसका जघन्य व उत्कृष्ट काल एक समय मात्र है ।

उत्पन्न होनेके द्वितीय समयसे लेकर शरीरपर्याप्तिसे अपर्याप्त रहनेके अन्तिम समय तक एकान्तानुवृद्धियोग होता है । विशेष इतना है कि लब्ध्यपर्याप्तकोंके आयुबन्धके योग्य कालमें अपने जीवितके त्रिभागमें परिणामयोग होता है । उससे नीचे एकान्तानुवृद्धियोग ही होता है ।

लब्ध्यपर्याप्तकोंके आयुबन्धककालमें ही परिणामयोग होता है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । किन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, इस प्रकारसे जो जीव परिणामयोगमें स्थित है व उपपादयोगको नहीं प्राप्त हुआ है उसके एकान्तानुवृद्धियोगके साथ

---

♠ एदेसिं ठाणाओ पल्लासंखेज्जभागगुणिदकमा । हेट्ठिमगुणहाणिसलाका अण्णोण्णब्भत्थमेत्तं तु ।। गो. क. २४१. ✪ प्रतिषु 'पधाणं' इतिपाठः । ♋ आप्रतौ 'वीणालावा' इति पाठः । ✤ उववादजोगट्ठाणा भवादिसमयट्ठियस्स अवर-वरा । विग्गह-इजुगइगमणे जीवसमासे मुणेयव्वा ।। गो. क. २१९.

◆ अवरुक्कस्सेण हवे उववादेयंतवड्ढिठाणाणं । एक्कसमयं हवे पुण इदरेसिं जाव अट्ठो त्ति ।। गो. क. २४२.

✲ एयंतवड्ढिठाणा उभयट्ठाणाणमंतरे होंति । अवर-वरट्ठाणाओ सगकालादिम्हि अंतम्हि ।। गो. क. २२२.